प्रो. शांतनु चौधुरी - सीएसआईआर-सीरी के निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण

प्रो. शांतनु चौधुरी ने दिनांक 9 मार्च 2016 (बुधवार) को सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) के निदेशक के रूप में अपना पदभार ग्रहण किया। इस पद को सुशोभित करने वाले वे संस्थान के सातवें निदेशक हैं। अक्टूबर 2015 में संस्थान से सेवानिवृत्त हुए डॉ चंद्रशेखर के बाद उन्होंने संस्थान के निदेशक पद पर कार्यभार ग्रहण किया है। इनसे पूर्व डॉ अमरजीत सिंह, डॉ खोकले, डॉ जी एन आचार्य, प्रो. आर एन बिस्वास, डॉ शमीम अहमद तथा डॉ चंद्रशेखर ने इस पद को सुशोभित किया है। इससे पूर्व सीएसआईआर द्वारा सीएसआईओ चंडीगढ़ के निदेशक प्रो. आर के सिन्हा को संस्थान के निदेशक का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया था।

गुलदस्ता भेंट कर निदेशक महोदय का स्वागत करती हुई
सुश्री नलिनी पारीक, वैज्ञानिक

प्रो. शांतनु चौधुरी ने संस्थान में कार्यग्रहण के उपरांत सभी सहकर्मियों को संबोधित किया। संस्थान के मुख्य सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने सभी सहकर्मियों को संबोधित करते हुए इस आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया। संस्थान के सहकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि सोच के स्तर पर समानता बहुत महत्वपूर्ण है।

सभागार में उपस्थित सहकर्मियों को अपना प्रथम संबोधन देते हुए
प्रो. शांतनु चौधरी, निदेशक,सीएसआईआर-सीरी

उन्होंने कहा कि एक वैज्ञानिक के रूप में हमें सदा नए विचारों की खोज में रहना चाहिए और किसी संस्थान या संगठन का निदेशक भी इससे अलग नहीं है। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान में खुले वातावरण और कार्य संस्कृति की सराहना करते हुए कहा कि इसी के परिणामस्वरूप सीरी ने विगत वर्षों में कई उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। उन्होंने कहा कि हमें शोध कार्यों में सदा नए और ओजस्वी विचारों के साथ आगे आना चाहिए। संस्थान में निदेशक की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि निदेशक का कार्य एक उत्प्रेरक या कैटलिस्ट (catalyst) की भूमिका निभाना है।

सभागार में उपस्थित सहकर्मी

उन्होंने इस अवसर पर टीम वर्क के महत्व को रेखांकित करते हुए संस्थान को और ऊँचाईयों पर ले जाने के लिए संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक व अन्य सहकर्मियों को साथ मिलकर कार्य करने का आह्वान किया। इस परिप्रेक्ष्य में विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि किसी भी टीम की सफलता उसके सभी सदस्यों के सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करती है परंतु बिना व्यक्तिगत श्रेष्ठता या उत्कृष्टता के यह संभव नहीं है क्योंकि यही व्यक्तिगत श्रेष्ठता अक्सर अन्य सदस्यों के लिए भी प्रेरणादायक होती है। उन्होंने कहा कि निदेशक के रूप में मेरा प्रयास रहेगा कि संस्थान का प्रत्येक सहकर्मी स्वतंत्र रूप से कार्य करते हुए अपने वैज्ञानिक एवं अन्य लक्ष्यों को पूरा करे और संस्थान की प्रगति में अपना योगदान दे सके। उन्होंने कहा कि विश्व स्तर पर अपनी पहचान सुदृढ़ करने के लिए हमें शोध परियोजनाओं पर मिशन मोड में काम करना होगा।

विश्व के शोध मानचित्र पर संस्थान को स्थायी रूप से स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि यदि हम वास्तव में उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होना चाहते हैं तो हमें ऐसा ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकसित करने की योग्यता अर्जित करनी होगी जो अनूठी हो, नई हो और विश्व स्तर पर स्वीकार्य हो। हमारा संस्थान विश्व स्तर पर स्वीकार्य प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने के लिए प्रसिद्ध हो। यह हमारे सस्थान की प्रतिष्ठा के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि हमारे संस्थान की वैज्ञानिक जनशक्ति में यह योग्यता है और हम सामूहिक प्रयासों के बल पर यह लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

सहकर्मियों को संबधोधित करते हुए
प्रो. शांतनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

बौद्धिक संपदा समृद्ध करने की आवश्यकता पर प्रकाशडालते हुए उन्होंने कहा कि यह दो प्रकार से समृद्ध की जा सकती है – पहला शोध प्रकाशनों के माध्यम से और दूसरा पेटेन्ट प्राप्त कर। नए और युवा वैज्ञानिकों विशेष रूप से एसीएसआईआर के पीएचडी शोधार्थी छात्रों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा वे इस दिशा में अपना योगदान दें।

स्वागत उद्बोधन देते हुए श्री राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक

इससे पूर्व कार्यक्रम के आरंभ में संस्थान की वैज्ञानिक सुश्री नलिनी पारीक ने गुलदस्ता भेंट कर प्रो. शांतनु चौधुरी का स्वागत किया। इसके बाद मुख्य वैज्ञानिक श्री राज सिंह ने स्वागत उद्बोधन देते हुए प्रो. चौधुरी का औपचारिक स्वागत किया। उन्होंने उपस्थित सहकर्मियों के समक्ष प्रो.चौधुरी का संक्षित परिचय देते हुए उनकी शैक्षणिक एवं व्यावसायिक उपलब्धियों का उल्लेख किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री के पी शर्मा, प्रशासन नियंत्रक

कार्यक्रम का संचालन श्री महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी ने किया। अंत में प्रशासन नियंत्रक श्री के पी शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रो. चौधुरी के प्रेरक व उद्बोधन के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रो. शांतनु चौधरी
निदेशक, सीएसआईआर-सीरी, पिलानी (राजस्थान)

- संक्षिप्त परिचय -

जन्म तिथि - 16 जनवरी 1961

संस्थान में पदभार ग्रहण – 9 मार्च 2016

शैक्षणिक अर्हताएँ

1) बी टेक (1984) – इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इलेक्ट्रिकल कम्युनिकेशन, आईआईटी, खड़गपुर
2) पी.एच.डी. (1989) – कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, आईआईटी, खड़गपुर

अनुभव

क) आईआईटी दिल्ली में वर्ष 2000 से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर (संस्थान में कार्यग्रहण से पूर्व एचएजी वेतनमान में मूल वेतन रु. 79000.00 पर कार्यरत)

ख) आईआईटी दिल्ली में डीन, स्नातक पाठ्यक्रम (2009-2012)

विशेषज्ञता क्षेत्र - इमेज प्रोसेसिंग, एम्बेडेड सिस्टम्स, मशीन लर्निंग

शैक्षणिक मार्गदर्शन

- पीएचडी – 15
- स्नातकोत्तर (एम टेक) – 120

प्रकाशन/लेखन कार्य

शोध पत्र - 259

लेखन कार्य - मल्टीमीडिया ऑन्टोलॉजी : रिप्रेज़ेन्टेशन एंड एप्लिकेशन , जुलाई 2015

(सहलेखक – अनुपमा मल्लिक, हिरण्मय घोष)

इसके अतिरिक्त आप आईआईटी दिल्ली में लगभग 16 करोड़ रुपये की प्रायोजित परियोजनाओं और परामर्शदात्री सेवाओं पर पर कार्य कर रहे थे ।

पेटेन्ट (आवेदित/स्वीकृत Applied/Granted) - 12

अन्य व्यावसायिक भूमिकाएँ

1. इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर (वर्ष 2000 से)
2. आईआईटी दिल्ली में डीन, स्नातक पाठ्यक्रम (2009-2012)
3. पैरामीट्रिक कंप्रेशन पर आधारित वीडियो कंप्रेशन के लिए नई तकनीकें विकसित करने में योगदान, जिसके लिए उद्योग (एसटी-माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स) को पेटेन्ट प्रदान किया गया है।

4. इमेज कैटेगराइज़ेशन एंड ओरिएन्टेशन डिटेक्शन स्कीम का विकास, जिसका उपयोग सैमसंग ने अपने एक उत्पाद में किया है, इसे भी पेटेन्ट प्राप्त हुआ है।
5. संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित परियोजना हेतु स्मार्ट कैमरा के लिए एम्बेडेड सिस्टम का विकास, इसके लिए एन ए एल तथा औद्योगिक सहयोगियों ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की प्रक्रिया आरंभ कर दी है।
6. आप मुद्रित भारतीय लिपियों के लिए संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MCIT)द्वारा वित्त पोषित 'डेवलपमेन्ट ऑफ रोबस्ट डॉक्युमेन्ट इमेज एनालिसिस एंड रेकग्निशन सिस्टम' नामक परियोजना (फ़ेज़ 2) के कन्सोर्टियम लीडर हैं जिसमें देश भर के 15 संस्थान शामिल हैं । परियोजना के प्रथम चरण में आपने भारतीय लिपियों के लिए ओसीआर विकसित करने वाले 11 संस्थानों के कन्सोर्टियम का नेतृत्व किया। आपकी टीम ने वेब (टीडीआईएल वेबसाइट) पर सामान्य उपयोग के लिए देवनागरी, बांगला, गुरुमुखी, मलयालम, तमिल, कन्नड़ तथा तेलुगू लिपियों के लिए पहली बार ओसीआर तैयार किए।
7. आप विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के इंडियन डिजिटल हेरिटेज प्रोग्राम के अंतर्गत चल रही परियोजनाओं (जिसमें 11 संस्थान शामिल हैं) के समन्वयक हैं। इन परियोजनाओं में हम्पी की विरासत के डिजिटल रूप में पुन:स्थापन तथा संरक्षण हेतु तकनीकें विकसित की जा रही हैं।
8. आपने एल जी के साथ सहयोगात्मक परियोजना में एल जी स्मार्ट फोन्स के लिए फ्लाई कोड कंप्रेशन तथा ट्रांस्फर स्कीम का विकास किया।
9. आपने क्वॉलकॉम के लिए जेस्चर एंड टच इनपुट्स के संयोग से स्मार्ट फोन में देवनागरी अक्षरों के उपयोग हेतु नई प्रौद्योगिकी का विकास किया। इस कार्य के पेटेन्ट के लिए आवेदन किया गया है।
10. आपने इन्टेरा सिस्टम्स लिमिटेड के लिए रेफरेन्स फ्री वीडियो क्वालिटी मूल्यांकन हेतु नई प्रौद्योगिकी के विकास में योगदान दिया। इस प्रौद्योगिकी के पेटेन्ट के लिए आवेदन किया गया है।
11. क्लाउड बेस्ड इमेज सुपर-रज़ोल्यूशन स्कीम के लिए एक योजना विकसित की जिसके लिए सैमसंग ने पेटेन्ट हेतु आवेदन किया है।

सदस्यता/फेलोशिप/व्यावसायिक संस्थाओं से संबद्धता

क) फेलो i) इंडियन नेशनल अकैडमी ऑफ इंजीनियर्स (FNAE)

ii) इंडियन नेशनल अकैडमी ऑफ साइंसेज़, इलाहाबाद (FNASc)

iii)इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ पैटर्न रेकग्निशन (FIAPR)

ख) ए सी एम

ग) आई ई ई ई

घ) आई ए पी आर

पुरस्कार एवं सम्मान

क) इन्सा (इंडियन नेशनल साइंस अकैडमी) का मेडल फॉर यंग साइंटिस्ट्स (वर्ष 1993)

ख) अनुसंधान क्षेत्र में योगदान के लिए एसीसीएस – सीडैक सम्मान (वर्ष 2012)

ग) 'याहू ! फैकल्टी रिसर्च एंड एंगेजमेन्ट अवार्ड के रूप में 10000 यूएस डॉलर का पुरस्कार(वर्ष 2013)

घ) आईआईटी-दिल्ली के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग में वर्ष 2004 से 2009 तक लगातार श्लमबर्गर चेयर प्रोफेसर

ङ) जुलाई 2013 से धनंजय चेयर प्रोफेसर